पाठ 7. लालची बंदर

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को लालच और ज़िद न करने तथा समय रहते समझदारी से काम लेने की सीख प्रदान करना है। ज़्यादा लालच करने से हम किसी मुसीबत में फँस सकते हैं इसलिए हमें लालच के बजाय समझदारी से काम लेना चाहिए। मुसीबत के समय घबराना नहीं चाहिए तथा लगातार कोशिश करते रहना चाहिए।

पाठ का सारांश

एक शरारती बंदर कई दिनों से भूखा था। वह खाने की तलाश में इधर-उधर घूम रहा था। तभी उसको एक सूने घर में एक घड़ा दिखाई दिया। घड़े में कुरकुरे चने भरे हुए थे। बंदर ने अपने दोनों हाथ घड़े में डाल दिए लेकिन वह चने नहीं निकाल पाया। घड़े का मुँह बहुत छोटा था इसलिए वह अपना हाथ नहीं निकाल पा रहा था। लालच के कारण बंदर चना भी नहीं छोड़ना चाहता था। वह बहुत देर तक कोशिश करता रहा फिर भी हाथ नहीं निकाल पाया और तब तक घर का मालिक रामसुमेर एक डंडा लेकर आ गए। उसके बाद बंदर के साथ क्या हुआ होगा, बच्चों तुम खुद ही सोच सकते हो। अंत में कवि ने बच्चों से पूछा कि अब तुम सब बताओ बंदर ने क्या गलती की।

अध्यापन संकेत

पाठ पढ़ाने से पूर्व **पहले पहल** में दी गई गतिविधि बच्चों से करवाएँ तथा पाठ की पृष्ठभूमि से संबंधित चर्चा करें। बच्चों से पूछें, क्या उन्होंने बंदर को देखा है, बंदर क्या-क्या खाते हैं, बंदर का स्वभाव कैसा होता है आदि। उसके पश्चात पाठ का लय और सुर के साथ आदर्श वाचन करें।

बच्चों से पूछिए तथा उन्हें समझाइए–

- ❖ क्या वे कभी शरारत करते हैं?
- ❖ क्या किसी चीज़ के लिए उन्होंने अपने माता-पिता से ज़िद की है?
- ❖ बच्चों को बताएँ कि लालच का परिणाम बुरा होता है।
- ❖ मुसीबत आने पर हमें किस तरह समझदारी से काम लेना चाहिए, इन बातों से उन्हें अवगत करवाएँ।
- ❖ बच्चों को यह भी समझाएँ कि ज़िद करना अच्छी बात नहीं है।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।